c. सम् *id.* संवीत tectus. N. 9.6.13.46.

व्योमन् *n.* (fortasse a r. दिव् splendere, abjecto द्, praef. वि, suff. मन्, v. द्यो, द्यु, द्युत्, विद्युत्) coelum. In. 2. 27.5.15.

1. व्रज् 1. *P. interdum A.* 1) ire, procedere. H. 1.7.: पुनर् अस्मान् उपादाय तथै 'व व्रज; N. 3.9.: व्रज नैषध माचिरम्; 9.35.: ज्ञातीन् व्रजेत्; Mah. 1.2263.: व्रजध्वम्. 2) facere (v. चर्). Ur. 49.10.: व्यापारं व्रजसि मे शरीरे *du machst Anspruch. V.* वृज् i. e. वर्ज्.

c. अनु 1) sequi. N. 13.61. 2) *i. q. simpl.* Mah. 3.8266. Man. 2.241.

c. अनु praef. सम् sequi. Mah. 2.1606.

c. आ adire. N. 8.6.

c. उत् praef. प्रति obviam ire. Ragh. 1.90.; v. गम् c. उत् praef. प्रति.

c. परि ambulare, oberrare, huc illuc migrare. Man. 6.33. 41.

c. प्र progredi, abire, ire. Mah. 2.2613.: वनाय प्रवव्रजुः. — *Caus.* in exilium mittere. Ragh. 12.6.: रामम् प्राव्राजयत्.

c. सम् praef. उप intrare. Man. 6.51.: आगारम् उपसंव्रजेत्.

2. व्रज् 10. *P.* व्राजयामि (संस्कृतौ त्यागे *K.* संस्कृतौ गतौ *V.*) ornare, relinquere, ire. (*Vid.* 1. व्रज्, वृज्, वृश्च्.)

1. व्रण् 1. *P.* (शब्दे *K.* रुतौ *V.*; scribitur etiam ब्रण्) sonare. (*V.* रण्, ध्रण्.)

2. व्रण् 10. *P.* (ut videtur, Denom. a व्रण; scribitur etiam ब्रण्) vulnerare. (V. व्रण et cf. lat. *vuln-us*, slav. *rana* vulnus, lith. *róna* id., *in-roniju* vulnero; hib. *leon* «affliction, a wound, a moth»; *leonaim* «I wound, sprain»; fortasse etiam nostrum *Wun-de*, germ. vet. *wun-da, wun-ta* huc pertinet, mutatis liquidis *r* et *n*, v. Graff. I. 896.)

व्रण *m. n.* vulnus. (*V.* व्रण् et cf. व्रश्च्.)

व्रत *m. n.* (fortasse a r. वृ i. e. वर् eligere, transposito वर् in व्र, suff. त) votum, devotio, pietas. Sa. 4.3.6. Bh. 6.14. N. 5.21.13.69. In. 4.7. *Saepe in fine compos. bah.* e. c. पतिव्रता erga conjugem pietatem, devotionem habens, conjugi devota, addicta. N. 10.14.13.43. देवव्रत diis addictus. Bh. 9.25. दृढव्रत firma vota habens, votorum tenax. Bh. 7.28.9.14.

व्रश्च् 6. *P.* (छेदने *K.* छेदे *V.*; in tempp. spec. corripitur in वृश्च्; part. pass. वृक्ण) scindere, abscindere. Bhatt. 14.77.: वव्रश्चुः; 9.41.: व्रश्चित्वा ... अपातयत् तरून्.

c. अव *id.* Rigv. 51.7.: वृश्चा शत्रोर् अव विश्वानि वृष्ण्या «frange inimici cunctas vires».

c. आ *A. id.* Rigv. 27.13.: मा ज्यायसः शंसम् आवृक्षि «nunquam optimi *cujusque dei* laudem interrumpam».

c. वि *id.* Rigv. 61.10.: विवृश्चद् वज्रेण वृत्रम् इन्द्रः; 32.5.: स्कन्धांसी 'व कुलिशेना विवृक्णा «arbores quasi securi caesae».

व्री 4. *A.* et 9. *P.* (वरणे *K.* वृत्याम् *V.*) eligere. *Cf.* वृ.

व्रीड् 4. *P.* pudore affici. व्रीडित pudibundus. N. 7.18. Sa. 1.35.

व्रीस् 1. et 10. *P.* (वधे) pulsare, occidere. *Cf.* व्रूस्.

व्रुड् 6. *P.* (संवृतिसंहतिमज्जनेषु) tegere, colligere, accumulare, mergi.

व्रूस् 1. et 10. *P. i. q.* व्रीस्.

व्ली 9. *P.* व्लिणामि (धरणे *K.* गत्यां वृत्याम् *V.*) tenere, ire, eligere. *Cf.* व्री.

व्लेक् 10. *P.* (दृशि) videre.

श

श् Haec littera orta est e क् et respondet graeco κ, lat. *c*, lith. *k* et *sz*, slav. *k* et *s*, hib. *c*, *ch* et *s*; germ. *h*; v. gr. comp. §§. 21.87.

1. शंस् 1. *P. interdum A.* 1) dicere, indicare, narrare. N. 13.53.: शंस मे का 'सि कस्य वा; 12.35.: नलं यदि न शंससि; 12.126.: यदि ज्ञानीथ नृपतिङ् क्षिप्रं